

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अस्मिन् दिनेऽर्चयित्वा त्रयोविंशतिं
 सांनिध्यं कुरु ॥ ॥ अर्चयित्वा त्रयोविंशतिं सांनिध्यं कुरु ॥
 अर्चयित्वा त्रयोविंशतिं सांनिध्यं कुरु ॥ अर्चयित्वा त्रयोविंशतिं
 सांनिध्यं कुरु ॥ अर्चयित्वा त्रयोविंशतिं सांनिध्यं कुरु ॥

मिऊननेनीधनेगनेदु
शेव॥कुभापेदुसाछिदानरुन॥

एनभात्ताकताथयथा ॥ रगर्वंष्ट्रमुमिक्कामिवियत्रितविविकथं ॥
 शृष्टात्तायवक्कामिवियत्रितयत्रिकथं ॥ गमक्तिर्भात्तामिसः ॥

प्रह, ध्वननडयीव, ध्वनियवित, शिवमायानवव, ध्वयारुल, कुप
मन्तामश्रयुव, धनयालन, वर्यकन, ध्वयासाकि, योसथिवल्लिवि
य, ध्वयवूजायाय, लोकध्वलध्वनहीया, याय, लोहायास, मास
यूर्हयादाव, तामुयागस, मित्रयूवीतया, दं, दिवध्वन, रु, मु

१. नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय

बलन
उकया

नक्षत्रया
सा कि॥
नक्षत्रया
मानक्षत्र
मन्त्र॥

ध्याया
साया

दयामिषा
सा विहा
या

नाम नक्ष
म नक्ष
निक्ष
या

निक्ष
वक्ष

नक्ष
उनाक

नूवाहानयात् दानविय इतिरुवतिनिश्चिर्तं ॥ १ ॥ गवक्षिर्भा
 वामगमले निष्कालनस धायाहायव धनहायव ध्ववियविता वन
 हमाया ध्वयारुल दुर्वनाश सर्वहानि गृहयतिनास ध्वयासानि
 योहाधिवलिविय कामानियूजा तय्यहा वलिविय यहुयायमात्र
 अयत्रिमिताधमरही या ० याय कवदानविय वदुविम्वदानविय
 हिदु अयार्य दानविय ध्वयनसानि ॥ २ ॥ गवक्षिर्भा दवेया
 (नाम ले म (यौत) न का नानमि धी ने मि म न व यो व व म रु यि य ना सा या इ
 सा ध म सा इ सा स न या इ सा स्वा मि मृ गु रु रु यि ध ने रु यि ना ग इ यि ध

या हा नि ति य सा स ना न अ ग्य या त क र मि दान क न स य जा रु यि ध म न
 दान विय न नि १० रु स ध ज वी य के वा फ न शी ज ने यी के हा नि
 मिषान खा विवयव ध्वविपवीत मृ ग्य सा या ध्वया विपविता महाभागी
 इयीव महारुय अक्षमास ८ ध्वयासानि दशकाधवनिविय नीगव
 तीधमरही या ० याय पुष्पपात्रमिता यूजायाय सुवर्ह हाऊनस रु
 तयवीतयादं नन्नग रु दानविय हिदुयाग अथवा वेदावायया
 न दानविय ध्वयनसानि ॥ ३ ॥ गवक्षिर्भा विदुगले सववया
 ध्वविपविता अक्षमाया गगुदय लक्ष्मीनास सफवर्षन लक्ष्मीमा
 न क रु का य व व उ श या ची नी व यू उ ध मे रि द मि तु रु न ध्वया
 हा नि न नि ४ नू दान विय अ ग्य या य न रु ग मृ नि यू जा या दा दा न

२ धननिष्ठ
सविधा



यगयया

माहावन
सागया

उलकधि
अया

साहाउ
अया

चिन्ता मनूय असूत्र नाग गन्धर्व दिवाउनु केल वंगल यीगि समस्त
लोक उत जूनन युगियान यादवाडा कनगा २४ खदयै के आहूविल
॥ **क** ॥ धन मनूयया नाता डयदवन इयावथाद कानिमिर्कित धनसा म
हायायन इयीव धयासा किर्ता विधित उतकंन निधयइया ॥

ग्वेकिना यगायस हाक याकवाक खहा रुता दहा हा यायु इहाववया
स सव सिमास समसुनडाव ध खंगाया विपत्रिा इतडाव खदनहा क
रुता व दहा हा रुता वीन मकिनीता धया हाय क याग साघ सुनि हा न स याय निरु
ले स द न सा मिसकूय अकि सु धमन क धय धडा क या धय वु न काता सु नय
आस को प्र न धय धडा क न या ता न विरध न सी ग म र म ग क ध माहा
वन दहा हा उा दिन मरिद गा मरिवा न या प्री रुता या सक ना या हा उा वस न ना रु सु

या नृदयति नाग इयीव खनान हा इयीव धयासा कि महावलिविय
यवनकाया ० यायक कणयुजा यावक रुतिदानविय सुव ह्दान
विय जूननदानयाय धतिनसा कि इयूव ॥ * ॥ **दिनस डवकवाव**

या कणशत्रुसर्ता कणशलशर्ता वृद्धधन मनु इयीव धाशत्रुसा कुडु
म मायिव धननाग इयीव धया विपत्रिा अकि मयागसा धध इयीव ॥

धयासा कि महुलागी यरु याय या ० याय दवता युजा याय वलिविय
अमस्तमल क स सा दहा उायु धाह न दहा उायु धया हा ख यिन प्रीम
या दाखन धया रु नु स प्रीमी इयु आसीनिक धन हा नि इयु
आसीनिक के रे रे धन मात्रिा धया सा कि सा र सा दाद र सी

॥ ॥

[illegible]

याय, धूनिन शाक्ति ॥ ३ ॥ कस, मदाया, मदत्र, कुवल, दाव, अथवा
कमूज, दानदाव, केल, ऊर्क, दालदाव, सयानि, ध्वयण, कृणा, इत्रदाव
महाभागी इयीव, प्रायन, गाल, मतयिव, स्वामि, मलन, इयीव, अग्नी, एय
दयीव, कल, रुदयीव, धनिया, शाक्ति, डि, दून, दायायमान, डिन, ति, डा
हान, मनुष्य, वृष, आदाव, हि, दूयाग, दानविय, वजा, वार्य, याग, दानविय
वा, क्ल, एयाग, नवग, रु, दानविय, हामयावक, वलिविय, विधिगलय
जयय, दा, मान, वनव, क, या, रु, ल, उ, श, म, जयया, क, क, क, ल, र, र, र, र, न, मो, नि, उ, क, स, लो
पू, र, ००, या, दा, सी, ना, स, र, ००, क, स, ना, लो, र, ००, अ, या, सा, ति, र, व, क, द, उ, या, क, ज, य, य
न, उ, क, द, उ, य, ज, या, य, दो, ल, डि, क, न, ज, य, या, य, मा, न, ग, ल, व, स, ठान, ग, न, न, म, स

तु जानविच, मंदुताकावकि, उासिमदुत,
मेनहि की जानविज, उासुनयात, धर्म
नसाग ॥ सुदुत साग न सुधाड ॥

विश्वशाय

एविविडाया विडाया असव धि प्र य व ग र न हा य हा सु ध न क लि सा धु य च य त्रा मि सु द य वा क न रा
म नू दान वि य खि न जा हा उ न रा के ध न न सा ग ॥ म य न वि गु स वा द ध र्ता ग ॥ ॥

मयाय समस्त वृद्धि माल सुयनरु ३२ आकित आध्याव वलिताय
काना लत्रिक डिकुलि लाय यथनी क्काया गुत्रफा अनावा मइक
दशकन थति कदयकाव वत्रिविय ना दा ध्व ही इइ धत्रि थुतिविधि
न सात्तिकर्मयाय वि इहावव थाय स वा का या व डक्कि क वत्रिविय
थनतयाव क्काय दानविय वन्दुविन्नु कंशयाप स धलतयाव य
का सी हि इ वजा वार्ययात दानविय अन्तदान थुतिन सात्ति रुवति
१ जी म रु क या रु ल ३ उ क रु क या मा रु क दा व ना हा के सा ना रु ल म हा के सा रु रु रु ल हा रु रु ले
आ या सा ति धि थ रु जा सा ति व रि मा रु ध व रु जा व व ल का या ध ध न न सा ग ॥ ० ॥

विधया
उपदने

विश्व
शाय
विश्वमात

एविविडाया विडाया असव धि प्र य व ग र न हा य हा सु ध न क लि सा धु य च य त्रा मि सु द य वा क न रा
थ जा धा ति जानि वि डा दे य का उ ये जा या रु उ द क न दि धा स वा य थ ति न
॥ द्रु स र गि लु दान विय ॥ * १ * ॥ गृह मूखि वा * थ व रु म थ रु न म
प्रथशत्र विक्कु माल ख दा या थ या विय वि त सा क स ना य रु यी व क ल रु रु
यी व क्काया मो र्य रु व थ या जा ति वि धि अरु क षि सि ज ल न या रु आ दा व
अरु क षि र ग ल दा ता या व त ति १० लू थ दा व व जा वार्य या त हि इ या
त दान विय म हा व लि वि य थु ति न सा ति का न य ७ ॥ ८ ॥ स्वान य

॥ थ व वा सा रु धा स खि वा न दान क्काया य न रु या व क न सा खि न क्का
१ वि वि दान दान दान या म वि नि डा क ल रु य उ वे न हा नि रु रु उ अ मा न रु रु य उ इ रु
रु रु न मा ति डा थ या धा ति जा न खि वा सा हा व लि या त थि न उ य का उ ये जा या

विश्वानवान
क्या
धनेन

विश्वानवान
क्या
धनेन

[illegible]

संग २३
द्यैयसंवा

४ अमीजीन
अदमूर

[illegible]

असिगत
हृदय

१ दोनरु आ नडा थउहुता न रुगेता रूथ वारुल. थउ हुता न सहु रू धुता. । हानि के तति इया ध
यारु से. सा ग या म रुते. थ विता उ अ स चा का या उ वाधि द न खू सेवा य. व धि प्र. व उ रु या गे त
या रु स म दा य. थ ग न हा का ८। ५

विष्णु आ
मोक्षाय

गमूत्रया, लेखनया, धनया, नवमूत्रया, दंडनया, आदिवै, इद्राया, यान
याण, ध्यायस, मनर्थित, धकार्ययायमात्रा, गृह्यति, मनतशुचीव, दं नाना
द्रुतध्यायनका, यायमात्र, ध्यासाकि, शिद्रयात, वडावार्य, यातनति
१० लूदानविय, अन्नदानविय, धृतिनसाकि ॥ १० ॥ नानाप्रसादं

सुख भाव
रुचि या
को न विद
रुचि या

तैवाऽप्युक्तानि शब्दश्च यवत् पर्वतदाकरवनीवत् कुण्डलसख
स्वर्गतवालखतीव अथवा काठिनीव ध्याविद्यत्रितमहारयदयीव

निमज्जाय नैन नयुआ धक
नसिनुतयाजान भुदानविद्य
महादधाय जासा दिष्टक॥

अथ मेद न हो या या आ दा न य अथ
य व य आ धन को का सु स द य क

या याज्ञादायः श्री
न कोटा सुसूयक
धलेय १

द. खनीव यल वव खनीव द्वाया खद श्रया मरिठ सियरुव समस्त लोक
 याद रिद्रुशयीव दक्षिण द्वा शयीव निश्चय ध्यासाकि यीचन द्वाया ० या
 य पुष्प १३ सिजलन याग आकाव हामल द्वायत्रधकाव धलीगवल
 नि १० लून द्वालगद खकागुनी आकाव थवयूरहिताया दानविय म
 हावलि विय संगराउ श्रकृत्वा ॥ १३ ॥ हामकालथ ७ हामया
 ल अग्नी स्थायनाया ल म कासीवाल द्वाधक सिताकाव उजमानया

दक्षिण सियरुव द्वादीय गा मरिठ ध्यासाकि रुनी हामयाय कंण
 लाह धलथकाव अष्टा १० १८ ३ दानविय डाहान वन्दमा आका
 व गुनरुजाल याग दानविय डयक लनयाय धूतिन सानि निश्चिती ॥
 ॥ १० ॥ दिवीयूजाया प्रमहा थाली आदियं वाहन स्यात् हिमभू
 सी खिद्रुयीव ध्यारुल उजमानया मृत्करुय द्वादन द्वा शयीव ध
 यासाकि रुनी आगमयूजा याय सादानविय अन्नदानं कुर्यात् सानि

दक्षिण यूजा यय सो दानविय म उ उ य यो यय व द्वा धन न सा ॥ मि उ उ य उ य न म य ॥
 दक्षिण यूजा यय सो दानविय म उ उ य यो यय व द्वा धन न सा ॥ मि उ उ य उ य न म य ॥

सि १
 हामया प्र
 मि कया
 के य प्र मि
 मि कया

होम क
 के या
 वि क के
 या

दक्षिण
 दक्षिण

मसकास
इनाया

दत्त स्वामी
 योग सा
 नन्द स्वामी
 योग सा
 योग सा

[illegible]

कायन
व्यनाने
याकुस
शनसा
दहाले
सशनसा

यद्यपि ना
मिमांसा

[illegible]

कृतनि
उद्वेग

हिचाव
क्या

ॐ नमः
शुभं भवतु
ॐ नमः
शुभं भवतु
ॐ नमः
शुभं भवतु

द्वितीय
नक्षत्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथवा हिमि महायीव नानावर्तुया दैवानीव अथवा अगि लेख वा
धनपीव ध्वया धननाम इयीव ध्वया साकि लेख मुक्त खदा धय स ऊ
लय ह्ययाय अगि धियाग लदान विय अनदात विय धूगिन साकि ॥

॥ २९ ॥ वक्तु मननयि वक्तु नतयीव अर्थन इयीव गश नसा च
कनका वस्त्रय धन स्ववास्त्रवा धयाव गुवा इयूव निवदा यका सत्रा च
वस्त्रय धन धन यव स नत्रसा अग्नीरया ॥ दक्षिण स नत्रसा वध्व हानी
इयीवा ॥ नम मय स नलसा यग नरा दयीव ॥ यश्चिम स नत्रसा धन न

मिन हा व आम लिह धया रुत लो न मृ पु कल रु श यि व लो न रु ००: धुया म
लि ज व म या ग क ले दान विय कन स दू गो या ग क म लि व ति वि र क
स न या लि न न स मा न अग्नी रुत स मा न रुत म क दू ध नि म लि ॥

नारा वायु वा नत्रसा लोक स काय दयीव ॥ उक्त स नत्रसा धन हानी
इयूवा ॥ ०० म न स नत्रसा सर्व सिद्धि मय स नत्रसा मृग्य रुय दयीव
ध्वया साकि ककाय वक्तु दान विय दक्षिण धन साकि ॥ ३० ॥

स्वमदले का धन दू ऊ क व धवाया मृग्य रुय वयीव यत्र व क यो रुय
ध्वया साकि महा वलि विय यी व न द्वा या ० याय धूगिन साकि ग व कु

॥ ३१ ॥ वाक ल सि दा वया धन नाहा कान रु द इयूव
धन महा मायू माया धय ध्वया सा कि क क व दान विय ध

वक्तु
न न डीय

मिन न
अ या

धय म दन
काय दू
को डीय

वाक ल सि
या

१॥ सिसु सिसु कृताम्बा संसि दाता निजा थया रु ल. के व धूवा ल मृ तु रं ॥ ३ ॥ थ
जा सो नि. मा ला दता यूजा अ वि स क. मि तुं जू य या थ धू ॥ २० ॥ सा नि का श्री य या थ

तितसानि॥ ३२ ॥ वृत्तिगीजायोनलाकायध्वलया मयदा

ॐ श्रीनमो महादेवकृत्याहं मनुजं युतिवानयायनिमित्तिनध्वसाय

दयका इत्यादि ॥ ० ॥ ॐ तिष्ठति या प्रसासु डयदवनशुकांति

साक्षिनां विधिनां समाप्तः ॥ ० ॥ सम्बन्धः २०३ काफिक कृष्ण

अष्टमी अष्टम वनद्वय शुक्रयोग आदिवात श्वकृद्वायव्य

कादिनश्रवा ॥ चनकिखाल येगदुक्कमहावित्त योगाज्जाग

१ मङ्गल मिथुन दल धन साहि भक्ति व भे नोन तिल का चै चू दो न सल व स म मा

कयूयात्रा दू नया तदा न विरय श्रीमहादेव यज्ञाय यथा विप्रसाति ॥

महोद्दीनन् वडावान् वायाश्वा ॥ ऊष्मद्वृत्तयाम्बिगा ॥

रहउंगकृतिनाकाल, गऊन्दकपललिलया, सर्वसप्तपुरंगसु

अधिरावनराधिराशा ॥ दवराक इ मु ह्या न, या थ च दू या थारि

॥ यामाहा महिद्वयामाहा कुरुते नो यदमि तु इह ॥

यू हानि कूटू, मा हानि विलिग, अया सा नि, स न व नु या थ या ज

क. हाकनम वक्र दृष्ट्या य. द्वाया या द्वा मा वा न प्र या द्वा न

हय काडा। हवा वात छुय. धन न सा. सा न जान स कह

सद्यः विज. का. न. राज. न. क.
पृ. २. स. धर्म. ना. सा. ना. क. रा. गो. ॥

रुतिसं
५१ ग०

का न समा
स्या दीया

* जा न द्वा म या न कं ब्रूया मा ग्नी सि द्ध य मा न् वा न्न न द्वा म वि द्ध न सो ला
अ न या क मा स थ गि ग्नी ति ॥ अ न्ति सो न स यो द थ ॥

धी वलिवियकं मरुमलान् साधनी या ० या वकं ॐ द्वा द वा य
ऊ या वकं गु म या ए स दृ ग ग या व दान विय अथ वा रु म ल ग य
व दान विय थ गि न सा नि ४॥ १२ ॥ (गमिनिर्ना क ग म श्रू व कं
ता यू व थ वी य रि त य धी मा या थ या रु ल म रु प्रा गी श्रू व थान
या ल न श्रू व व मु ता ण व र्ष ण मा स ण थ या ण नि द ण को ध व
लि विय कं द ण ध्र म णी या ० या वकं दान या त्र मि ता य ऊ या वकं
१ त या थो य को न व न या का नि हा नि ज थ या दा रु श्री व ज या श्री या दा रु द न
दा स थ गि न श्रू व ३ सो दा न या द न द स लो न य त या द द ण दा रु व ल न य
मु लो न य न रु लो न य न अ मु नि द व या के मा य थ गि न सो गि द द ह मे र

कं श्रू व
ता क
॥
॥
॥

४३ क या

न यो न य
क्रा क या

द्वानलका नवगुरु दान विय वा न्न न र्कं क दान विय आचार्य या
त थू गि न सा नि ४॥ १३ ॥ (गमिनिर्ना डा क म द ल म श्रू यान् हि
व न या व ल स ता ल रु व या थ विय रि त ॐ न्द्र मा या थ या रु ल
द द्धि न द्वा कृ द या ता क त्रा य मृ त्पू त्रा य थ या ण नि व रु वि ण ति
ऊ गी नी यू ऊ व लि य ह्वा या त्र मि ता ध्र म णी या ० या य वे ग्य यू ऊ
गु व्वा रु न यू ऊ थ गि न सा नि ॥ १४ ॥ ॐ लि विय रि त स मा य ४॥

न य व रु
त्ये न व रु
वे रु
व यो